ओबद्याह

1 ओबद्याह का दर्शन। एदोम के बारे में प्रभु
परमेश्वर यह कहते हैं। हम लोगों ने यहोवा
की ओर से एक खबर सुनी है, और एक दूत
को दूसरे राष्ट्रों में यह कहने को भेजा गया
है : उठो! हम उससे लड़ने जाएँगे! 2 "देखो,
मैंने तुम्हें दूसरे देशों के बीच छोटा बनाया है।
वे तुम्हें बहुत तुच्छ समझते हैं।" 3 हे पहाड़ों
की दरारों में बसनेवाले, जिसका बसेरा ऊँचे
स्थान में है, तुम्हारे घमण्ड ने तुम्हें धोखा
दिया है। तुम अपने मन में कहते हो, कौन
मुझे ज़मीन पर उतारेगा? 4 लेकिन चाहे तू
उकाब के समान ऊँचा उड़ता हो, तूने तारों
के बीच अपना घोंसला बनाया हो, तौभी
मैं तुझे वहाँ से खींचकर नीचे लाऊँगा, प्रभु
परमेश्वर का यह कहना है। 5 यदि चोर आते,
रात के समय डाकू तुम्हारे पास आते, (हाय
तुम कैसे मिटा दिए जाओगे!) तो क्या वे
तब तक नहीं चुराते जब तक कि उनका मन
न भर जाए? यदि अंगूर तोड़नेवाले तुम्हारे
पास आते, तो क्या वे कहीं कहीं थोड़े अंगूर
छोड़कर नहीं जाते? 6 देखो तो एसाव का
धन कैसे ढूँढ़-ढूँढ़कर लूट लिया गया है।
जो खजाना उसने छिपाकर रखा था, उसका
कैसे पता लगा लगाकर निकाला गया है!
7 तुम्हारे साथी जिन्होंने तुमसे वाचा बान्धी
थी, वे सभी तुम्हें सरहद्द पर लाकर धकेल
देंगे। जो लोग तुम्हारे साथ मेलमिलाप से
रहते थे, वे तुम्हें धोखा देंगे, और तुम्हारे
खिलाफ ताकतवर होंगे। जो तुम्हारे खाने में
से रोटी खाते थे, वे तुम्हें जख्म देंगे। उनमें
कुछ समझ नही हैं!" 8 प्रभु कहते हैं, "क्या मैं
उस दिन एदोम के बुद्धिमानों को, और एसाव
के पहाड़ में से समझ को नाश न करूँगा?
9 और हे तेमान, तुम्हारे वीर-बहादुर घबरा
जाएँगे, जिससे एसाव के पहाड़ पर बसने
वाला हर कोई कत्ल किया जाए और नाश
हो जाए। 10 हे एसाव, तुम्हारे भाई याकूब
के खिलाफ तुमने जो अत्याचार किया उसके
कारण तुम शर्म से भर जाओगे, और हमेशा
के लिए नाश कर दिए जाओगे। 11 उस दिन
जब परदेशी लोग उसके लोगों को कैद कर
ले गए, उसकी धन-दौलत लूटकर ले गए,
उस दिन तुम अलग हटकर खड़े हो गए थे।
और जब पराए लोगों ने यरूशलेम के फाटकों
से घुसकर उस पर चिट्ठी डाली, उस दिन
तुम भी उन लोगों में से एक थे। 12 लेकिन
तुमने यह ठीक नहीं किया कि तुम अपने भाई
के दुख के दिन, अर्थात उसकी विपत्ति के
दिन जब वह विदेशी हो गया, तब तुम उसे
देखते रहे। और न ही यहूदा के संकट के
दिन, उसके नाश होने के दिन तुम्हें आनंद
मनाना था। उनके संकट के दिन तुम्हें घमण्ड
की बात कहने से बचना था। 13 मेरे लोगों
की विपत्ति के दिन तुम्हारा उनके फाटक
से घुसना ठीक नहीं था। सचमुच, यह ठीक
नहीं था कि तुम उनके संकट के दिन उनकी
बुरी हालत को देखते रहते। और यहूदियों के
नाश होने के दिन, उनके संकट के दिन तुम्हें
उनकी धन-दौलत को हाथ नहीं लगाना था।
14 यह बिल्कुल ठीक नहीं था कि तुम चौराहे
पर खड़े होकर उन लोगों को मार डालो जो
बचकर भाग रहे थे। उनके संकट के दिन
जो लोग बच गए थे, उन्हें तुमने दुश्मनों के
हाथ सौंप दिया यह तुमने ठीक नहीं किया।
15 क्योंकि सारे राष्ट्रों के लिए परमेश्वर याहवे
का दिन नज़दीक आ रहा है। जैसा तुमने

किया है, वैसा ही तुम्हारे साथ भी किया
जाएगा। तुम्हारे करतूत तुम्हारे ही सिर पर
लौटकर आएँगे। 16 क्योंकि जिस तरह तुमने
मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी तरह दूसरे
राष्ट्र भी लगातार पीते रहेंगे, हाँ, वे पीएंगे,
और वह निगलेंगे, और वे ऐसे हो जाएँगे जैसे
वे पहले कभी नहीं थे। 17 लेकिन उस समय
सिय्योन पहाड़ पर बचे हुए लोग छुटकारा
पाएँगे। और वहाँ पवित्रता पाई जाएगी। उस
दिन याकूब का घराने फिर से अपने वतन
का अधिकारी हो जाएगा। 18 तब याकूब का
घराना आग, और यूसुफ का घराना आग
की लौ होगा। एसाव का घराना तो खूँटी
बनेगा; और वे उनमें आग लगाकर उनको
भस्म भस्म कर डालेंगे और एसाव के घराने
में से कोई भी नहीं बच पाएगा; क्योंकि प्रभु
याहवे ने यह कहा है। 19 इस्त्राएल के दक्षिण
में रहने वाले देश के लोग एसाव के पहाड़
पर कब्जा कर लेंगे, और नीचे मैदान में रहने
वाले लोग पलिश्तियों के अधिकारी होंगे। वे
एप्रैम और सामरिया और गिलाद को अपने
कब्जे में कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद
पर अधिकारी जमाएगा। 20 इस्राएलियों के
उस दल में से जो लोग कैद से लौट आए
हैं, वे जाकर कनानियों के देश पर सारपत
तक कब्जा करेंगे और यरूशलेमियों में से
जो लोग बंधुआई में हैं, जो सपाराद में रहते
हैं, वे सब दक्षिण देश के नगरों पर कब्जा कर
लेंगे। 21 उद्धार करनेवाले एसाव के पहाड़
का इन्साफ करने के लिए सिय्योन पर्वत पर
चढ़ आएँगे, और राज्य परमेश्वर याहवे का हो
जाएगा।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com